प्रभु से विनय

हे प्रभु! तू कल्याण करने वाला है। आज तू हमें क्यों प्रेरित नहीं कर रहा है। हम भी तो तेरी सृष्टि में आए हैं। यह सँसार भी तो आपका बनाया हुआ है। भगवन्! आपने इन दुराचार और इन पाप कर्मों को क्यों रचाया? आज प्रभु! इनको न रचाते तो हम सँसार में पापी न बनते। प्रभु आज हम पापी हैं। हमें अपने कँठ से लगा। आज हमें प्रेरणा देकर उन पाप भावनाओं को समाप्त करा। प्रभु! हम ज्ञान अग्नि में इन्हें भस्म करना चाहते हैं। विधाता! हम तेरी शरण के लिए महत्ता चाहते हैं। प्रभु! तेरी सहायता चाहते हैं। हमें वह सहायता दे जिससे हम ब्रह्मा के समीप जाएँ हम यज्ञशाला में जाएँ। अग्नि प्रज्वलित करें और देवताओं को हवि दें। देवता उसे पाकर प्रेरणा देंगे जिन प्रेरणाओं को पाकर प्रभु! हम तेरी गोद में जाएँगे। हे कल्याणकारी प्रभु! तू कहाँ है? आज हमारे कल्याण के लिए योजना बना। हम तेरी सँसार रूपी यज्ञ वेदी पर आए हैं। हमें प्रेरणा दे। हमें महान् बना। हम वास्तविक ब्रह्मा बनें, योगी बनें। आज विधाता हम अपना ही कल्याण नहीं चाहते, हम सँसार का कल्याण चाहते हैं।

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ संख्या
1.	प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	1
2.	यज्ञोमयी-विष्णु	पूज्यपाद-गुरुदेव	3-17
3.	अलंकार और इतिहास	पूज्यपाद-गुरुदेव	18-31
4.	सामग्री का शाकल्य	पूज्यपाद-गुरुदेव	32-33
5.	मन	पूज्यपाद-गुरुदेव	34
6.	किताबों के नाम, दान, सूचना इत्यादि		35-36

शृङ्गीऋषि बेवसाईट

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के प्रवचनों की अमृतवाणी को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से वैदिक अनुसंधान समिति ने बेवसाईट का शुभारम्भ किया है जिसका पताः

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस महामना परमपिता परमात्मा जो सर्वज्ञ है उसके गुणों का हम सदैव गान-गाते रहते हैं। क्योंकि वह वेदज्ञ है, प्रकाशक है, विष्णु है, पालक है और उसी की पालना से मानों गतिवान यह जगत् हो रहा है, वह गतिवान भी है। तो आज का हमारा वेद-मन्त्र उस महान देव की महिमा का गुणगान गा रहा है। तो इसीलिए उस परमपिता-परमात्मा को हमारे यहां पालक कहा जाता है क्योंकि वह पालना के मूल में विद्यमान रहता है और वही मानों शासक है। शासक-कर्ता उसे कहा जाता है। प्रत्येक मानव इसीलिए अनुशासन में परणित होना चाहता है और यह चाहता है कि मैं भी अनुशासित बनूं। मैं उद्धृत हो जाऊं और वह नियन्त्रण में अपने जीवन को ले जाना चाहता है।

मनीषी

तो इसीलिए आज का हमारा वेद-मन्त्र यह प्रेरणा दे रहा है

मानव का शरीर है और मानव है तो यह बड़ा एक विचार का वाक है। तो मानव का शरीर और मानव, मानव शरीर में जो विद्यमान होने वाला किसी स्थली पर रहता है तो वह मनन करता है इसलिए उसे मानव कहा जाता है। शरीर एक यन्त्र माना गया है जिस यन्त्र में जैसे मानव का गृह है और गृह-स्वामी और गृह स्वामिनी, दोनों उस गृह में मानों देखो अपने नाना विचार-विनिमय करते रहते हैं। अपने गृह को ऊंचा बनाने के लिए विचारते रहते हैं। जैसे विद्यालय है और विद्यार्थी है। मानो विद्यालय उसे कहा जाता है जहां विद्यार्थी, आचार्य विद्यमान हो करके अपने मानव जीवन के लिए, शरीर के संचालन करने के लिए और मानवता को लाने के लिए बेटा! देखो नाना प्रकार की विद्याओं का अध्ययन करते हैं। तो गृह और गृह-स्वामी मानों दो वस्तुएं इसी प्रकार मानव और मानव का शरीर। तो शरीर मुनिवरो! देखो वह गृह है और मानो मनन करने वाला एक **मनीषी कहलाता है।** तो उसको मनीषी कहते हैं जो आत्मा के संरक्षण में रत्त रहता है। तो हमें देखो उस मनीषी को विचारना है और अपने इस मानव-शरीर आत्मा का जो यह गृह है इसी गृह में विद्यमान हो करके शरीर में बेटा! विचार-विनिमय किया जाता है और एकत्रित हो करके जैसे इसी में सबका, समूह का निर्माण होता है। मानो देखो यह कौन-कौन सी स्थलियों से इसका निर्माण हुआ है। मेरे प्यारे! देखो यों तो और प्रकृति के सूक्ष्म और स्थूल द्रव्य माने जाते हैं परन्तु सूक्ष्मता में उसमें मेरे प्यारे! देखो दस-प्राण हैं और दस-इन्द्रियां हैं मानो देखो इसमें पांच तृप्तियाँ मानी जाए जिसमें मन चतुष कहलाते हैं मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार तो मानो यह चौबीस अवयवों वाला यह शरीर है। जब इस भवन का निर्माण होता है तो इसमें

माना गया है दस-प्राण है जो मानो देखो प्रेरित हो करके और इनको जानने वाला ही मनीषी कहलाता है। तो बेटा! देखो इस गृह का जो स्वामी है वह मनीषी है। और मनीषी उसे कहते हैं **जो मनन करता है और जो मननशील है उसी का नाम मनीषी कहा जाता है।**

तो विचार आता है बेटा! देखो हमें मनीषी बनना है। मानो देखो गृह और गृह स्वामी दोनों के ऊपर मुनिवरो! देखो जब हम विचार-विनिमय करते हैं तो मानो देखो एक मनन करने वाला मनीषी और एक मानो शरीर जिस गृह में विद्यमान हो करके वह मनीषी बनना चाहता है। तो मेरे प्यारे! देखो आज मैं तुम्हें विशेष इस सम्बन्ध में चर्चा नहीं करना चाहता हूं। वेद-मन्त्र इसको मनीषी कहता है **मनय अव्रता** देखो **मनश्च प्रवाहाः** वेद का वाक् कहता है, हे मानव! तू मनीषी बन, हे! मानव तू मानो देखो शरीर-रूपी-गृह में विद्यमान हो करके तू अपने में मनीषी बन, मनीषी बन करके तू सागर से पार होने का प्रयास कर। मान और अपमान रूपी सागर में जो तरंगे उत्पन्न हो रही है मानों देखो कोई अपमानित कर रहा है कोई मान कर रहा है मानों देखो ऐसा कोई मनीषी ऐसी स्थली को मंगलम ब्रह्मा दोनों एक सामान्य जान करके तू मनीषी बन सकता है।

विष्णु की व्याख्या

तो मेरे प्यारे! देखो मैं कई समय से तुम्हें विष्णु की याचना कर रहा हूं और विष्णु के ऊपर अपना विचार-विनिमय दे रहा था। बेटा! देखो मैंने यौगिक-क्षेत्रों में ले जाते हुए तुम्हें मानों देखो ब्रह्मरन्ध्र तक मैं ले गया क्या वह विष्णु कहलाता है। जो बेटा! देखो मनीषी बन करके, विष्णु बन करके, मेरे प्यारे! देखो एक पैढ़ी द्वितीय

एक दूसरे को मानव पड़ावान बना करके और हम विष्णु बन जाते है।

तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरो! देखो हमारे यहां जैसे विष्णु नाम राजा का है, विष्णु नाम आत्मा का है। इसी प्रकार यज्ञोमयी-विष्णु वेद का वाक् कहता है **यज्ञम् ब्रह्मा विष्णु बृहीक्रता यज्ञोमयी** विष्णु कहलाता है। वेद का वाक् कहता है कि यज्ञोमयी-विष्णु, विष्णु याग को, याग का नाम बेटा! वसु भी माना गया है। वसु कहते हैं बसने वाले को जो हमें बसाने वाला है उसका नाम वसु है। तो याग का नाम वसु भी कहा जाता है और याग का नाम बेटा! देखो यज्ञोमयी-विष्णु है। हे विष्णु! तू याग बन करके हमारा कल्याण करने वाला है, पालन करने वाला है क्योंकि विष्णु ही तो पालन करता है वह याग के माध्यम से हमारा पालन करता है। मेरे प्यारे! देखो याग की विवेचना करते हुए आदि-ऋषि-मुनियों ने अपना बड़ा मन्तव्य दिया है अपने-अपने विचार दिए है। उनके विचारों में बड़ी गम्भीरता और बड़ी औजसता रही है। तो विचार आता है बेटा! देखो वह यज्ञोमयी-विष्णु, मुनिवरो! देखो जब हमारे यहां याग का नाम विष्णु माना गया है। विष्णु उसे कहते हैं जो पालक है तो यह याग मेरे प्यारे! पालना करने वाला है। जब ऋषि-मुनि अपनी साधना में परणित होते रहे है अपनी साधना में जाने का प्रयास किया तो उन्होंने बेटा! यज्ञोमयी देखो विष्णु की अराधना की और विष्णु की आराधना करके उन्होंने बेटा! याग को अपना साक्षी बनाया और उन्होंने कहा **यज्ञोमयी-विष्णु** हमारी साधना जब पूर्ण होगी देखो जब हम विष्णु बनेंगे, हमारा विष्णु हमारे समीप रहेगा।

याग का नाम विष्णु

वायु-मण्डल पवित्र नहीं रहा है। वैज्ञानिक-जन भी यही कहते है कि विज्ञान की तरंगों में जो मानो देखो दूषित वायु वृत्त बन गया है उससे वायुमण्डल, वातावरण दूषित हो गया है, उसको प्रदूषण कहते हैं। तो बेटा! देखो प्रदूषण को नष्ट करने के लिए वैज्ञानिक जनों ने भी पूर्वकाल में यह कहा है कि **यज्ञम् ब्रह्मा विष्णु** तो मानो देखो विष्णु से यह वायुमण्डल पवित्र होता है और **वह याग है मानो जिससे वायुमण्डल पवित्र होता है।** एक मानव बेटा! साधना के लिए साधक बनता है और साधना के लिए जब वह वायुमण्डल में अपने विष्णु की अराधना करता है और वह कहता है हे! विष्णु तू मेरी पालना कर मैं तेरी शरण में आया हूं।

महर्षि-कागभुषण्ड-जी का याग

तो मुनिवरो! जैसे मुझे स्मरण आता रहा है एक समय बेटा! देखो महर्षि-कागभुषण्ड-जी और महर्षि-लोमश-मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान थे। तो लोमश-मुनि ने कहा कि कैसे अपने में मनन कर रहे हो ऋषिवर! तो कागभुषण्ड-जी बोले प्रभु! मैं चिन्तन में हूं और मैं चाहता हूं कि मैं साधना करूं परन्तु देखो मेरे शरीर का वायु-मण्डल और बाह्य-वायुमण्डल दोनों ही प्रदूषण बन गये है, दोनों अशुद्ध हो गये है। प्रभु! अब मैं कैसे इनमें बस सकता हूं क्योंकि यज्ञ का अमृते मैं वसु में वसना भी चाहता हूं। तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा याग का नाम वसु है। महर्षि-लोमश-जी ने कहा कि याग का नाम वसु है और तुम मानो देखो याग में बस जाओं और बस करके देखो उसमें साधना करो। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा प्रभु! मैं कैसे बसु

को, तरंगों को जब वह देखो उसका निरीक्षण करते है तो वह जल और अग्नि के माध्यम से करते हैं। मानो अग्नि के सूक्ष्म से सूक्ष्म स्वरूप को जान करके बेटा! उसमें छाया का दर्शन करते है और दर्शन करके ही मानो देखो उसे अपने में ही वसु बना करके उसे अपने में धारण करते है। तो तुम भी इसी प्रकार अपने में धारयामि बन जाओ। मेरे प्यारे! जब महर्षि-लोमश-मुनि-जी ने यह वाक कहा तो उन्होने कहा बहुत प्रियतम। तो उन्होंने मुनिवरों! याग का प्रारम्भ किया। याग का जब प्रारम्भ किया तो बेटा! उसमें अनुष्ठान करता है। यज्ञमान अपनी देवी से कहता है देवी हम दोनों को अनुष्ठान करना है। इसी प्रकार देखो साधक अपने में अनुष्ठान में लग जाता है और अनुष्ठातित होता हुआ मानो देखो वह अपने में संकल्प करता है और अपने मनो की मनीषी बन करके वो तरंगों को वह स्वाहा के साथ में वायुमण्डल में प्रसारित कर देता है और वह वायुमण्डल में मानो देखो अग्नि उनको ले करके मानो तरंगित कर देती है और वहां का जो वायुमण्डल है, परमाणुवाद है उसका शोधन कर देती है। अशुद्ध तरंगों को वह अशुद्ध मानो देखो परमाणुओं को नष्ट करना और उनका शुद्धिकरण करना इसी का नाम मेरे प्यारे! वसु है। जब ही तो हम बसेंगे जब हमारे जीवन में से देखो विजातीय शब्दों का, विजातीय क्रियाकलापों का हम से क्षय हो जाएगा अथवा वह नष्ट हो जाए और उनका शुद्धिकरण हो जाएगा, तो हम बस जायेंगे। जैसे एक मानव देखो व्याकरण में जाता है और व्याकरण उसी को कहते हैं जो विजातीय मानों देखो विजातीय शब्द को समाप्त करके सजातीय को जहां सजा देता है उसी का नाम सजातीय कहलाता

परिणत हो गये। नित्यप्रति बेटा! याग करते और वह जब याग करते तो अपने मन में यह विचारते कि मैं इस याग का अधिपति हूं अथवा मैं इस याग का यज्ञमान हूं और यज्ञमान उसे कहते हैं जो मानो देखो उसका अधिपति होता है और अधिपति मेरे प्यारे! देखो उसका आहार, व्यवहार उसकी वाणी मानो देखो शुद्धिकरण में देखो एक महानता में परणित हो जाए। तो वह कागभुषण्ड जी उसी प्रकार प्रातःकालीन मेरे प्यारे! वह याग प्रारम्भ करते और गायात्राणी छन्दों में रमण करते और रमण करके मुनिवरो! देखो उनका आहार भी उसी प्रकार का होता जब वह आहार करते तो मुनिवरो! देखो अमृतम् मनो को क्योंकि मन को मनीषी बनाना है तो मन को मनीषी बनाने के लिए देखो आहार पवित्रतता की आवश्यकता रहती है। तो बेटा! देखो मुझे उनका जीवन जब स्मरण आता है तो वह गायत्राणी वेद-मन्त्रों का स्वर चल रहा है गान चल रहा है, और वेदमन्त्रों में मन-प्राण, मन-मस्तिष्क उसमें लगे हुए है और वह अपने आहार को भी उसे मानो देखो निष्ठा से देखो उसका शुद्धिकरण करता है और उस अन्न को बना करके जब उसका पान करता है तो मन की तरंगे पवित्र होती चली जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो वह **यागम् भूतम् ब्रव्हे** तो मुझे उनका जीवन स्मरण आता रहा है तो उन्हें इसी विचारों में जब उन्हें एक आधा अनुष्ठान हो गया, छः वर्ष, बारह वर्ष का उन्होंने अनुष्ठान किया जब छः वर्ष का उनका देखो आधा अनुष्ठान हुआ उन्हें वह मानों देखो सिद्ध हो गया और वह सिद्ध क्या मुनिवरो! देखो वायु मण्डल में जो अग्नि की धाराओं पर मानो स्वाहा के साथ में देखो मन-मस्तिष्क जो एकाग्र रहता उसकी जो तरंगे थी वह जब

करता है तो मुनिवरो! देखो मुझे ऐसा स्मरण आता रहता है उनका जीवन मुझे स्मरण है बेटा! देखो वह अपने में श्रुति अव्रतम देखो उसका वसु बन गया। वह याग उस काल में वसु कहलाता है क्योंकि उसमें वह ऋषि में बस गया है और वह मानो देखो अशुद्ध का शुद्धिकरण हो गया है। बाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकार का शुद्धि-करण हो गया। तो मेरे प्यारे! देखो विचार-विनिमय क्या **अमृतम् ब्रह्मा** देखो एक समय महर्षि-व्रेतकेतु-मुनि-महाराज वह विद्यालय में अध्ययन कराते थे। अध्ययन कराते हुए मुनिवरो! देखो उनके यहां देखो किसी कारणवश अशुद्ध तमोगुण देखो रजोगुण छाया। रजोगुण छा करके उन्होंने देखो ब्रह्मचारियों को दण्डित किया। जब ब्रह्मचारियों को दण्ड देने लगे दण्ड देते हुए मानो देखो वह रजोगुण छाया रहा और वह तमोगुण की मात्रा भी उसमें बलवती हो गई। मेरे प्यारे! देखो अब्रहे जब सायंकाल हुआ उन्होंने कहा मेरा देखो अन्तरात्मा मंगलम बृही देखो रजोगुण में छा गया अब मैं क्या करूं। बेटा! कहीं उन्हें यह प्रतीत हो गया था क्या भयंकर बनो में देखो महर्षि-कागभुषण्ड-जी अपना अनुष्ठान कर रहे है। वही लोमश-जी का दर्शन होगा मैं मानो दर्शनार्थ उनके क्रियाकलापों से मेरा अन्तरात्मा पवित्र होगा इन विचारों से मेरे प्यारे! देखो वह वहां से गमन करते हैं और गमन करते हुए जब भयंकर वन में पहुंचें तो प्रातः कालीन का समय हुआ वहां काग-भुषण्ड-जी अपने याग में परणित थे और वह याग में लगे हुए थे। तो बेटा! देखो ऋषि भी आज्ञा पा करके आहुति हूत करने लगे। जब वह हूत करने लगा तो मनो में तमोगुण छाया हुआ था। तमोगुण क्यों छाया हुआ था? क्योंकि **विभिक्षाम भूति** महाराजा अश्वपति

के छात्र भी और वह मानो आचार्यजन भी उनका मन मस्तिष्क देखो भ्रमित हो गया, चंचलतता आ गई। चंचलतता जब आई, तो मुनिवरो! देखो **ब्रह्मणे वातप्रवाः लोकाम** ऐसा मुझे प्रतीत है क्या जब मुनिवरो! देखो जब उसमें हूत करने लगे और वह जब तरंगों को दृष्टिपात करने लगे कागभुषण्ड-जी तो बेटा! देखो उनकी अशुद्ध तरंगें, उनका तमोगुणी तरंगें मुनिवरो! देखो वायुमण्डल में और रजोगुणी तरंगें भरण करने लगी। मेरे प्यारे! देखो कागभुषण्ड-जी ने अपने याग को शान्त कर दिया और शान्त करके उन्होंने कहा ऋषिवर! यह तुम क्या कर रहे हो तुमने मेरे याग को मानो देखो जो मैंने छः माह तक मैंने देखो उसका शुद्धिकरण किया अनुष्ठान के माध्यम से, आहार और व्यवहारों से और मैं इसमें बस गया था मेरा वसु तुमने मेरे से दूरी कर दिया है। मेरा वसु मेरे समीप नहीं रहा है मैं क्या करूं **ब्रह्मणे वातप्रवाः लोकाम** मेरे प्यारे! देखो आचार्य ने कहा हां प्रभु! आप का वसु आप से दूरी हो गया है, इसका कारण क्योंकि मेरे हृदय में तमोगुण है। उन्होंने बेटा! याग सब शान्त कर दिया। शान्त करने का परिणाम मंगले! उन्होंने कहा प्रभु देखो मैं गायात्राणी छन्दों का पुनः से पठन-पाठन किया और पठन-पाठन करने से मेरे प्यारे! देखो पुनः वह प्रवृत्ति उनकी आई।

वृतिका-मुनि का महाराजा अश्वपति के द्वार जाना

आने के पश्चात् देखो वह वृतिका-मुनि बेटा! वहां से गमन करते हुए लोमश-जी के द्वार पर पहुंचे और लोमश-मुनि से कहा हे प्रभु! तमोगुणी प्रवृत्ति मेरी क्यों बन गई है? मेरे प्यारे! उन्होंने

देखो शिक्षालय में जितने ब्रह्मचारी है उनका वाक्यम् ब्रह्म देखो उनके क्रियाकलाप सब तमोगुणी बन गई है मैं भी तमोगुणी बन गया हूँ, रजोगुणी बन गया हूं मैं मानो देखो शासम बृही है। हे प्रभु! इसके मूल में क्या है? क्योंकि यह विद्यालय तेरे राष्ट्र में है। मेरे प्यारे! देखो महाराजा अश्वपति ने देखो अपने राष्ट्र के कर्मवेत्ताओं को निमन्त्रित किया और सभा की और सभा करके उन्होंने कहा कि क्या कारण है कि विद्यालय में तमोगुण आ गया है इसका मूल कारण क्या है? तो मेरे प्यारे! देखो इसमें वह सब अपने में मौन हो गये। जो कर्मवेत्ता मानो विशेषज्ञ थे उन्होंने कहा हे प्रभु! देखो जो आपके राष्ट्र में कर लगा हुआ था मानो देखो वह कर का जो द्रव्य है वह सर्वत्र देखो तमो वृद्ध तमो जो द्रव्य होता है वह विद्यालयों में चला गया है। मेरे प्यारे! देखो विद्यालयों में वह द्रव्य, राजा अश्वपति के यहां यह नियम बना हुआ था क्या **विद्यालयों में वह द्रव्य होना चाहिए जो द्रव्य मानो देखो कृषक का द्रव्य होता है।** जो देखो वह अपने अन्न से जो द्रव्य एकत्रित किया जाता है वह द्रव्य कृषकों का मानो देखो विद्यालयों के क्रियाकलापों में शिक्षा में लगना चाहिए और जो द्रव्य मानो देखो जैसे व्यवसाय का द्रव्य होता है जो मिथ्या उच्चारण करके लिया जाता है वह द्रव्य गृही देखो पृथ्वी पर रसतल चलने वाले देखो मार्गों में लगना चाहिए। इस प्रकार महाराजा-अश्वपति का एक नियम बना हुआ था। मेरे प्यारे! देखो मुझे स्मरण आता रहता है उन्होंने कहा देखो ऋषिवर! का आगमन हुआ है ऋषि यह कहते है कि मेरे बाल्य जो ब्रह्मचारी है उनका अशुद्ध क्या देखो तमोगुण छा गया है मेरे अर्न्तहृदय में भी और मैं मानो महर्षि-कागभुषणु-जी के आश्रम में पहुंचा। मेरे प्यारे! देखो जब यह वृतान्त राजा-अश्वपति

हे वसु इन्होंने अपने में नष्ट करना चाहा है तो इसका क्या बनेगा राजन्! महाराजा अश्वपति ने कहा प्रभु! मुझे आप क्षमा कीजिए। हे प्रभु! मैं तो स्वयं कला कौशल करता हूं और मैं अपने देखो वसु को स्वतः उत्पन्न करता रहता हूं, मैं उसी में बसता रहता हूं, देखो राजा अपना स्वयं कला कौशल स्वयं कृषि का उद्गम करके उस अन्न को पान करता है उस अन्न से ही देखो हमारे जीवन की प्रतिभा का जन्म होता है और वहीं प्रतिभा हमारे जीवन का एक मूलक बन करके हमारे जीवन को महान बनाते है और राष्ट्र में देखो उसी प्रकार का हमारे में अवृत्त नहीं हो पाता। मेरे प्यारे! तो देखो उन्होंने कहा प्रभु! यह विद्यालयों में द्रव्य अच्छा होना चाहिए शुद्ध ही होना चाहिए। उन्होंने कहा बहुत प्रिय। तो राजा ने वह वाक् स्वीकार किया।

याग वसु है

तो मेरे पुत्रो! देखो विचार-विनिमय करने का हमारा अभिप्रायः क्या है महाराजा-अश्वपति के राष्ट्र के विद्यालयों में देखो महर्षि-वृतिका-ऋषि अपने में अध्ययन करते थे, ब्रह्मचारियों को अध्ययन कराते थे तो मेरे प्यारे! देखो यह याग हमारे यहां वसु वह याग है। **विद्यालय भी याग माना गया है** क्योंकि देखो वहाँ जीवन की जो अनुक्रमणिका है उसका निर्माण किया जाता है बाल्य-काल से ले करके वृद्ध-काल तक उसके जीवन की भूमिका का निर्माण विद्यालयों में होता है शिक्षा के माध्यम से, आचार्य के आचार व्यवहारों से मानों देखो वह भी याग है। इसी प्रकार देखो जहां देव पूजा-करते हैं तो देवता हमारे इस मानव शरीर में क्रियाकलाप करते रहते हैं। वह तो मानो देखो

इसलिए याग का नाम वसु है और यज्ञोमयी-विष्णु है क्योंकि देखो इसमें बसोगे तो यही हमारा पालन करने वाला है। तो पालना का अभिप्राय यह हमारे यहां पालना के कई प्रकार होते हैं। एक पालना उसे कहा जाता है जो माता अपने गर्भ में पालना करती है एक मानों देखो विष्णु बन करके शिक्षा में देखो उसे परायण बना देती है और वही मेरे प्यारे! देखो पालना का मूल है जो बाह्य-जगत् में और आन्तरिक-जगत् दोनों का समन्वय करके उसकी पालना की जाती है। मेरे पुत्रो! देखो यह पालना का मूल है तो पालन करने वाला विष्णु है इसलिए यज्ञोमयी-विष्णु, यज्ञोमयी-विष्णु बेटा! यदि मानव सुक्रियाकलाप नहीं करेगा वो बसेगा कहां? अरे! दुरिता में तो बसा नहीं जाता। देखो एक स्थली पर मानो क्रोध की मात्रा उत्पन्न हो रही है तो जो विशुद्ध प्राणी है वो वहां से चल देते हैं कहते हैं यह अशुद्ध है यह मानो देखो क्रोध की मात्रा आ गई है तो वह तो वसु नहीं कहलाता और जहां मुनिवरो! देखो दर्शनों की विचारधारा, मानवीय की विचारधारा हो रही है वहां मानव देखो अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो जाता है वह कहता है मैं यहां बसु मैं यहां बसूंगा वह बेटा! देखो उसको अपना वसु बना लेता है तो जितने भी सुक्रियाकलाप है, सुकर्म है तो मुनिवरो! देखो उन्हीं में तो प्राणी बसता है और उसी का नाम याग है। वही विष्णु है। मेरे पुत्रो! देखो कहता है यज्ञोमयी-विष्णु हे विश्वनाम ब्रह्मे देवानाम ब्रह्मा। मेरे प्यारे! देखो यज्ञोमयी-विष्णु माना गया है। तो विचार आता है बेटा! आज मैं विशेष चर्चा नहीं देता हुआ केवल यह क्या हम देखो अपने में वसु बनना चाहते हैं, बसना चाहते हैं। तो बसेंगे कहा? जहां मुनिवरो!

है। तो बेटा! देखो ऋषिजन याग के माध्यम से हमें विष्णु को विचार-विनिमय में लाते रहे अपने में धारयामि बनाते रहे। बेटा! देखो **अग्नाम भूतम ब्रह्मे अग्नि अब्रहे** यह सर्वत्र मानो देखो अग्नि में अग्नि एक सूत्र है देवताओं का मुख है और देवताओं के देवानाम मुखाः बेटा! देवताओं का जो मुख है वह अग्नि है अग्नि के मुखारबिन्दु में जिस वस्तु को तुम मानो देखो उसमें परणित कर दोगे वही सूत्र बन करके सब देवताओं को प्राप्त हो जाएगा और वह देवता मुनिवरों! देखो उस मानव के शरीर में विद्यमान है जहां मुनिवरो! देखो मन-मस्तिष्क स्थिर होते हैं और वही आत्मा बसता है, उन पंच-महाभूतों के लोक में बसता है। इसीलिए मुनिवरो! देखो **याग को वसु कहां गया है।** तो विचार आता रहता है बेटा! यह वसु ब्रह्मणा व्रता मानो देखो पंच-महाभूतों में निहित रहने वाला यह अनुपम जगत है और यह तेजोमयी कहलाता है। जैसे हमारे यहां बेटा! देखो याग का नाम विष्णु है इसी प्रकार देखो वह ब्रह्मणे असुतम मुनिवरो! देखो सूर्य का नाम भी विष्णु है। हमारे यहां विष्णु के बहुत से पर्यायवाची शब्द है। जब मैं वैदिक-साहित्य के ऊपर विचार-विनिमय करते हैं उसमें भौतिकवाद-आध्यात्मिकवाद दोनों का मिश्रण है और विज्ञानवाद मानो देखो उसकी पुठ लग जाती है। तो विचार आता रहता है बेटा! देखो सूर्य का नाम विष्णु है। यहां यज्ञोमयी-विष्णु, क्या विष्णु की याचना हो रही है। वह बसाने वाला, वैज्ञानिकों से जब यह प्रश्न किया जाता है हे! वैज्ञानिकों यह याग क्या है? तो पूर्व काल में मुझे स्मरण है उन्होंने यह कहा है क्या यज्ञोमयी मानो विष्णु है। यह पालना के मूल में है और देखो जब भी दूषित वायु-मण्डल

रहेगा तो वहां मानव बसता है, साधक अपनी साधना करता है। मन-मस्तिष्क को एकाग्र करके बेटा! उसका मन पवित्र बनता है। जब मन-मस्तिष्क दोनों पवित्र होंगे तो बेटा! वह विचार भी प्रिय करता है और जब उसका विचार प्रिय हो जाता है तो मन-मस्तिष्क बेटा! अपने में महानता को ले करके इस सागर से पार होने का प्रयास करता है।

तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा यह वाक् क्या कह रहा है। मैं कोई व्याख्यता नहीं हूं केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूं और वह परिचय यह है कि **यज्ञोमयी-विष्णु** इसको हमें अपने में धारयामि बनना चाहिए। मैंने बेटा! महाराजा अश्वपति के राष्ट्र की चर्चाएं की है और वह चर्चाएं इतनी गम्भीरता में मानो देखो राजा की जो वितरण-प्रणाली है वह कितनी भव्य और पवित्र होनी चाहिए जिससे बेटा! जो द्रव्य जिस प्रकार का हो वह द्रव्य उसी क्रियाकलापों में मानों देखो राष्ट्र का लगना चाहिए यदि मानो देखो वह द्रव्य यदि अमृते द्रव्य तमोगुण से देखो जिसका संचय किया जाता है उसको सतोगुण में लाओगे तो देखो सतोगुण को भी वह मुनिवरो! परिवर्तित कर देगा और उसको तमोगुण में ला करके त्याग देगा। इसी प्रकार देखो द्रव्य उसी प्रकार का जैसा द्रव्य हो उसको उसी क्रियाकलापों में, राष्ट्र की वितरण प्रणाली पवित्र होनी चाहिए। तो राजा के राष्ट्र में मानों देखो न तो प्रदूषण आता है और न राजा के राष्ट्र में द्रव्य की हीनता होती है। द्रव्य अपने में द्रव्यपति बन करके राजा अपने राष्ट्र को ऊंचा बनाता है। तो आओ, मेरे प्यारे! आज का वाक हमारा क्या कह रहा है। मैं कागभुषण्ड-जी की चर्चा

में मानो उनके जीवन से सुगन्धि आती है और सुगन्ध जो भी मुनिवरो! सुगन्ध लेता है वह सुगन्धित हो जाता है।

तो यह है बेटा! आज का वाक्! **आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय ये कि यज्ञोमयी-विष्णु इस याग की हमें पूजा करनी है और याग एक पुरुष है, एक वसु है जिसमें हम सब वशीभूत रहते हैं।** तो इसीलिए बेटा! याग का अपने में बड़ा महत्त्व और ऋषि-मुनियों ने इसके ऊपर अनुसन्धान किया है। कल मुझे समय मिलेगा तो बेटा! इससे आगे की चर्चाएं कल प्रगट करूंगा कि हमारे यहां देखो विष्णु सूर्य को कहते हैं, हमारे यहां विष्णु के बहुत से पर्यायवाची शब्द है परन्तु जहां भी पालना का प्रसंग आएगा वही विष्णु की विवेचना होगी और जहां पालना की प्रतिभा होगी। वही मेरे प्यारे! देखो विष्णु शब्द का प्रतिपादन किया जाता है। यह आज का वाक समाप्त। अब वेदों का पठन-पाठन होगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय बेटा! तुम जान गये होंगे वाक् बड़ा सूक्ष्म है वाक् बड़ा साधकीय वाक् था परन्तु देखो हमके ऊपर विचार-विनिमय होना चाहिए।

ओ३म् देवाः आभ्याम् मनु रथम् विश्वादतंमानाः वायाः।
ओ३म् तनुमन्थाः वाहौ वाचन्पराहं आपाः।
ओ३म् देवं सर्वाऽहं विश्वोव्रतं माहं आपाः।
ओ३म् देवाः रथमन्तनुः वायारथमात्माः यं सर्वाः।
ओ३म् दधिरतं वाया वायं त्वाः।

अच्छा भगवन्!

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वह परमपिता-परमात्मा अनन्तमयी है और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है। प्रत्येक मानव उस परमपिता-परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर अन्वेषण करता रहा है। परन्तु वह इतना अनन्तमयी है, क्या मानव जब अन्वेषण करता करता दूरी चला जाता है तो उनके उच्चारण में वह मौन हो जाता है और वह एक वाक् कहता है यज्ञनम बृही वाचनयम प्रह्मा अनन्तम प्रीणी व्रस्ता वेद का वाक् कहता है कि वह अनन्तमयी है और वह मानो देखो वह दृष्टि में आने वाला नहीं। तो इसीलिए उस परमपिता-परमात्मा का जो ज्ञान है अथवा उसका जो अनन्तमयी विज्ञान है वह इतना महान और पवित्रतम कहलाता है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से बेटा! अपने में अनुष्ठान करता रहा है और उसके जानने के लिए वह जानता-जानता भी मौन हो जाता है। तो इसीलिए हम उस परमपिता-परमात्मा को अनन्तमयी स्वीकार करते हुए अनन्तमयी अपने में विचार विनिमय करते हुए हम मौन हो जाते है।

हम मन से उस परमात्मा को जानना चाहते है ब्रह्मणम ब्रह्मे द्वितीय मन्त्र को कहता है क्या हम मनों में पाना तो चाहते है परन्तु पाया नहीं जाता। वह कहता है चक्षुर्मे-पाहि वह चक्षुओं से भी हम उसे नहीं जान सकते, वेद-मन्त्र कहता है श्रोत्रम्में पाहि मानो हम श्रोत्रों से भी उसको नहीं जान पाते, वह कह रहा है घ्राणं में तर्पेयामि हम घ्राण-इन्द्रियों से भी उसे जानना चाहते है परन्तु उसे नहीं जाना जाता। बेटा! देखो वह कहता है अश्वतम वाणं ब्रह्मे वाणी से उसको जानना चाहते है तो नहीं जाना जाता। मेरे प्यारे! देखो उसे कैसे जाना जाता है? जब वेद-मन्त्र यह कहता है क्या उसको किसी इन्द्री से नहीं जाना जाता। तो वेद-मन्त्र कहता है सन्नम ब्रह्मे क्रतम वाचनमन ब्रह्मा देवों असुस्तम क्या उसको जो मानव पाना चाहता है वह अपने को शान्त करने से प्राप्त होता है। जब मेरे प्यारे! देखो जब इन्द्रियों का विषय जान करके, चक्षुओं का विषय जानने के पश्चात् वहीं चक्षु दिशाएं बन जाती है, वाणी को जाना जाता है तो वाणी शब्दायमान अन्तरिक्ष का रूप बन जाता है। मेरे प्यारे! घ्राणम्में-पाहि यह घ्राण से जो पाना चाहते है उसे पाने के पश्चात वही घ्राणी मानो पृथ्वी का रूप अपने में धारण कर लेती है। मेरे पुत्रों! देखो जो चक्षु से जाना जाता है वह चक्षु जानने के पश्चात् अग्नि का रूप बन गये है। मेरे पुत्रों! देखो जो त्वचा से जानना चाहता है वह वायु बन गया। पञ्च-महाभूतों की क्रिया पञ्च-महाभूत के रूप में प्रायः जब परिणीत हो जाती है तो हम कैसे जाने वह तो व्यापक रूप बन गया है, अपने-अपने तथ्यों में वह मानो परिणीत हो गया उसी में रत्त हो गया है। तो हम परमात्मा को मानो कैसे जाने? तो बेटा वेद-मन्त्र कहता है आत्माम में तर्पम ब्रह्मे आत्माम देवा क्या **आत्मा को जानना चाहिए जो हमारे अर्न्तहृदयों में विद्यमान है** और

बेटा! उस समय उस बाल्य को अपने तन से आलिंगन कर लेती है और वह उसकी अपक्षुधा को लोरियों के द्वारा पान करा देती है उसके उदर की पूर्ति हो जाती है, वह तृप्त हो गया है। तो इसी प्रकार मानव भी अपने में तृप्त होता रहता है। यदि वह आत्मा को जान लेता है कि हमारे शरीर में कोई चेतना है और हम उस चेतना से कटिबद्ध है।

अलंकार व साहित्य में भिन्नता है

जैसे मुनिवरो! देखो हमारे यहां वैदिक-साहित्य में दो प्रकार की प्रतिभा मानी जाती है। एक अलंकारिक है एक साहित्यिक चर्चाएं होती है। बेटा! देखो साहित्यिक वह चर्चा होती है जैसे राजा हुआ परन्तु राजा का, राजा के जो क्रियाकलाप हैं राजा की जो मानो मन्त्रीगणों के जो क्रियाकलाप है वह सर्वत्र मानो साहित्यिक इतिहास के रूप में परिणीत हो जाता है और एक अलंकार होता है। अलंकार उसे कहते है जिस अलंकार में मानो प्रकृति की पुट लगी रहती है और प्रकृति की पुट लगने से मानो देखो एक अलंकार बन गया है और अलंकार को जब हम साहित्य में, इतिहास में परिणीत कर देते है तो न तो, साहित्य भी दूषित है और देखो वह अलंकार भी दूषित हो जाता है। दोनों के दूषित होने पर मानो देखो साहित्य की प्रतिभा समाप्त और अलंकार की मानो देखो अपने में उसकी प्रतिभा भी नष्ट हो जाती है। जैसे मुनिवरो! देखो हमारे यहां साहित्य में न ले करके उसी वाक् को हम अपने में मानो अलंकार में लेते है। जैसे मुझे एक समय मेरे प्यारे! महानन्द जी ने मुझे एक वाक वर्णन कराया था कि अगस्त-मुनि की चर्चा मुझे स्मरण कराई कि

देखो जैसे हमारे यहां कहा जाता है कि उसी समय जब वह खीरा बना करके और वह क्यों बनाया? क्या टटीरी के दोनों पुत्र समुद्र ने अपनी तरंगों में तरंगित कर लिए थे तो उस समय मानो देखो वह बड़ी व्याकुल हो रही थी और व्याकुल होने से देखो उन्होंने समुद्र का पान कर लिया और उनके दोनों पुत्रो की रक्षा हो गई। तो यह मानो एक अलंकार है यह इतिहास, ये साहित्य नहीं हो सकता। तो विचार आता है बेटा! देखो अमृतम ब्रह्मा सर्वश समुद्र को पान करना, चाहे वह मानो जगत-रूपी-समुद्र हो, चाहे वह मानो जलाशय का समुद्र हो दोनों का पान करना मानो देखो अलंकार में सिद्ध होगा यह इतिहास में सिद्ध नहीं हो सकेगा। तो इसीलिए देखो साहित्य और इतिहास मानो देखो अपने में अलंकारों में मानो देखो दोनो एक दूसरे के सत्यत्व को धारण करते रहे है परन्तु जब दोनों का समन्वय कर लिया जायेगा तो दोनों को समन्वय करते हुए दोनों की प्रतिभा भी नष्ट हो जाएगी। क्योंकि अलंकार को यदि हम इतिहास में परिणीत कर देते है तो इतिहास भी नष्ट हो जाता है इतिहास में एक अपवाद बन जाता है और यदि इतिहास को हम अलंकार में परिणीत करते है तो अलंकार भी एक अपवाद में परिणीत हो जाता है।

हमारे यहां वैदिक-साहित्य में यह आता रहा है, विचारको के मध्य में यह आता रहा है, जब अलंकार को उन्होंने वेद-मन्त्रों से गठित किया और वेद-मन्त्र में एक मन्त्र आता है **अमृतम अगस्ताम भूतम क्रति देवा अन्वेब्राहा रक्षाम भूतम ब्रह्मे अमृति देवत्वाम मनाः वाचम मनोगातम मनि वृण सुति देवा** बेटा! यह जब वेद-मन्त्र स्मरण आता है और वेदमन्त्र यह कहता है क्या अगस्ताम भूते मानो देखो

मानो **उस समय आत्मा का नाम टटीरी बन जाएगा** और जब टट वाहा अन्य तत्वन्य ब्रहे मानो देखो इसमें धातु और अपने स्वरूप को जानना होगा। तो मुनिवरो! देखो **उस समय आत्मा के दो पुत्र है** और वह कुछ जिससे मानो देखो आत्मा का जगत बनता है वह दोनों पुत्र है इसको **मन और बुद्धि कहते हैं।** मन, बुद्धि जब इस संसार रूपी जगत में मानो जब वह भ्रमित हो जाते है मेरे प्यारे! देखो मन भी भ्रमित है और बुद्धि भी भ्रमित हो रही है तो मानो देखो उसको संसार रूपी समुद्र में दोनों भ्रमित हो गये। दोनों की मानो रक्षा कैसे हो, तो मुनिवरो! देखो रक्षा का प्रसंग आता है तो उस समय कौन रक्षा करें, तो मुनिवरो! उस समय विवेक जागरूक होता है। जब मुनिवरो! देखो विवेक जागरूक हो जाता है। तो उस समय टटीरी मानो देखो विवेक रूपी अमृताम मानो देखो समुद्र को शान्त करना चाहता है। उस समय आत्माम भूतम ब्रह्मे मेरे प्यारे! देखो विवेक रूपी जो अगस्तम ब्रहे अगस्त उत्पन्न होता है और अगस्त मुनिवरो! देखो **विवेक से ही इस संसार को खारी बना दिया जाता है।** मेरे प्यारे! उपस्थ-इन्द्री के द्वारा त्यागने का जो विचार आता है बेटा! देखो वह विवेक से आता है। वह जितने काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह इत्यादि जो यह इन तरंगों का जो समुद्रों से तरंगे उत्पन्न हो रही है, प्रकृति से इनको जब वह अपने में धारण कर लेता है तो धारण करने से मुनिवरो! देखो विवेक उत्पन्न करके अमृतम देखो यह संसार न होने के तुल्य बन गया। कैसे बन जाता है जैसे हमारी इन्द्रियां मानो देखो इन्द्रियों के ऊपर जब संयम पाना चाहते है तो वही रूप बन गई जिससे वह इन्द्रियों का जन्म हुआ था जैसे नेत्रों का जन्म अग्नि से हुआ है, श्रोत्रों का जन्म दिशाओं

कोई गोलक नहीं रहा है, केवल गोलक में ही बन रहे गये है। परन्तु इनका जो स्वरूप है कोई स्वतः अग्नि बन गया, कोई दिशा बन गया, कोई आपो बन गया कोई अन्तरिक्ष बन गया अमृतम मेरे प्यारे! अपने रूप में प्रवेश कर गया। तो जब यह अपने इनको जान करके इसी प्रकार काम को जानने का प्रयास किया गया तो काम मुनिवरो! देखो जगत में परिणीत हो गया उसका रूप मानो देखो कामाबृही कमकक्षीया बन गया। तो मेरे प्यारे! यदि हम मोह को जानना चाहे तो मोह मुनिवरो! देखो आत्मा से जब विवेक से मोह हो जाता है तो मोह भी एक विवेक बन गया। इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो लोभ का हम अनुष्ठान करते है तो वह अहंकार के रूप में परिणीत हो गया है और वही **अहंकार से मुनिवरो! देखो संसार के पिण्ड बनते है** और पिण्ड को विकृत करने के पश्चात् बेटा! देखो वहीं अणु और परमाणु के रूप में परिणीत हो गया। मेरे प्यारे! देखो यदि हम रसना के जब आपो में प्रवेश करते है वही आपो मुनिवरो! देखो प्राण रक्षक बन गया है और सीमा मे वही प्राणों का रक्षक है और वहीं मुनिवरो! देखो वही वासना बन करके हमारे जीवन का विनाश होने लगता है। तो बेटा! देखो अपने-अपने स्वरूप में जब प्रत्येक स्वरूप अपने स्वरूप में प्रवेश हो गया है। तो मेरे प्यारे! देखो अपना कहां ब्रह्मणे ब्राहा क्रतम तो बेटा! देखो यह विवेक से मुनिवरो! देखो अगस्त बन करके और विवेक रूपी उत्पन्न हो करके अगस्त मेरे प्यारे! संसार को निगलता चला गया और संसार में जो आत्मा और मन भ्रमित आत्मा और देखो बुद्धि दोनों पुत्र भ्रमित हो गये थे उनका भ्रम शान्त हो गया। तो मेरे प्यारे! देखो अपने स्वरूप में प्रवेश हो करके मेरे पुत्रो! देखो केवल

बेटा! तो जगत से तुम पार हो जाओगे।

इस जगत में अपने स्वरूप को जानने से अपनी इन्द्रियों के स्वरूप को जान करके मानव सागर से पार होने का प्रयास करता है। मेरे प्यारे! देखो मृत्युञ्जय बन जाता है। जब मृत्यु को जान लिया जाता है क्या यह मृत्यु क्या है तो बेटा! देखो वह मृत्युञ्जय बन जाता है। मृत्यु को जब तक जानते नहीं है तब तक मानो हम उसी में भ्रमित रहते है। मुनिवरो! देखो मृत्यु क्या है? विचारने से प्रतीत होता है क्या मृत्यु अपने में कोई भी वस्तु नहीं है। मृत्यु केवल अज्ञान और न जानने का नाम मृत्यु है, और जब जान लिया जाता है तो बेटा! देखो मृत्यु का, मृत्यु का स्वरूप ही मानो बना रहता है, न जान करके बना रहता है और जानने से मानो देखो वही मृत्यु यमराज बन गया और वही यमराज मेरे प्यारे! प्राण के रूप में प्रवेश कर गया और वहीं प्राण मुनिवरो! देखो आयु के देने वाला है। बेटा! जब मैं इन वाक्यों के ऊपर विचार-विनिमय करता हूं तो प्रायः देखो यह संसार एक अलंकार के रूप में दृष्टिपात आने लगता है। मैं यह कहा करता हूं कि संसार में अलंकार को भिन्नता दी जाये और देखो इतिहास और साहित्य को भिन्नता दी जाये। यदि दोनों भिन्न-भिन्न रहेंगे तो मूर्ध्वा स्वरूप को जान सकेंगे और यदि दोनों को नहीं दे सकेंगे हम तो मुनिवरो! देखो अप्रतम वह दोनों भ्रमित हो जायेंगे।

जैसे मेरे प्यारे! देखो मुझे महानन्द जी ने एक समय मुझे वर्णन कराया कि **अहिल्या** के सम्बन्ध में एक चर्चा आई और अहिल्या का जो शब्द है वह अलंकारिक माना गया है। हमारे यहां वैदिक-साहित्य में जब अहिल्या के ऊपर विचार-विनिमय होता है **तो अहिल्या नाम**

हम देवत्व में जाना चाहते हैं। तो यहां इन्द्र भी मानो एक अलंकारिक भाषा में इन्द्राम तम ब्रहे देखो इन्द्र भी भगो वाला कहा जाता है। तो विचार आता है मेरे प्यारे! देखो गौ अमृतवही असुताम जब अहिल्या को मुनिवरो! देखो इन्द्र ने छला, इन्द्र ने अहिल्या को छल लिया और चन्द्रमा मानो द्वारपाल बन गया। मेरे प्यारे! गौतम उसका स्वामी है, गौतम रात्रि का स्वामी है क्योंकि हमारे यहां जो भी अंधकार का स्वामी है उसका नाम या तो ज्ञान हो सकता है या भौतिक रूप में मानो देखो चन्द्रमा हो सकता है। तो दोनों क्योंकि रात्रि को रात्रि के अंधकार को, श्रृंगार को कौन भोगता है भोगतव्य करने वाला बेटा चन्द्रमा है और वह चन्द्रमा हमारे यहां **चन्द्रमा को गौतम के रूप में वर्णित किया गया है जो गौ का स्वामी है। गौ नाम रात्रि का है** और जो रात्रि को मुनिवरो! अपने में धारण करने वाला है वही मानो देखो चन्द्रमा के रूप में परिणीत किया गया है। विचार आता है बेटा! इन्द्र ने जब अहिल्या को छला अब किस समय तक मानो देखो गौतम उस भोगतव्य को प्राप्त करता रहता उसी समय मानो देखो जब रात्रि का अन्तिम चरण आया तो देखो चन्द्रमा अमृतम बन गया और मुनिवरो! देखो वह इन्द्र बन करके वह रात्रि को उन्होंने ने अपने में धारण कर लिया। जब रात्रि को धारण, रात्रि का भोग कर लिया उसको छल लिया मेरे पुत्रो! देखो वह सहस्रो भगो वाला इन्द्र बन गया बेटा! सहस्र भग नाम हमारे यहां भगो के कई प्रकार के पर्यायवाची माने गये है। भग मानो देखो **चन्द्रमा की क्रान्तियों को भी भग कहा जाता है** जो गति करती है जो मानो देखो गतिवानम ब्रह्मा जो शक्ति के अनुसार जा करके सीमित हो जाती है। इसी प्रकार सूर्य को हमारे यहां इन्द्र कहा गया है इसकी

क्रान्तियों की ओर देखो ज्योतियों को नाम भग कहा जाता है। इसीलिए मुनिवरो! देखो वह शक्तिशाली है तो इन्द्र को, इन्द्र सहस्र भगो वाला बन करके मेरे पुत्र! देखो यह प्रकाशमान बना दिया रात्रि को अपने गर्भ में धारण कर लिया उन भगो में परिणीत करते हुए मानो उसे अपनाने का प्रयास किया। तो मेरे प्यारे! देखो अहिल्या नाम हमारे यहां देखो रात्रि का आता है।

जहां प्रकरण आता है यहां अहिल्या नाम मेरे प्यारे देखो! वह पृथ्वी को भी कहा गया है। हमारे यहां देखो जब **पृथ्वी को अहिल्या कहा जाता है तो वज्र के तुल्य जो अहिल्या का वास होता हो** उसी अहिल्या में मंगलम ब्रह्मे वर्णासुताम। तो मेरे प्यारे! देखो वह अहिल्या जब वज्र की थी तो वज्र की होने से मुनिवरो! देखो वह पत्थरम ब्रहा क्रतम देवाम भुखाम भूतम ब्रह्मे मेरे प्यारे! देखो अहिल्या अमृतम पत्थर के तुल्य पड़ी हुई है मानो अहिल्या का उद्धार करने वाला मेरे प्यारे! कौन है? कृषक है। उस भूमि को अपने में मानो देखो उसमें अपना पुरुषार्थ करता हुआ गऊ के बछड़ों की बलि देता हुआ मुनिवरो! देखो पृथ्वी को सुयोग्य बनाता है और सुयोग्य बनाकर उसमें अन्न की स्थापना करता है, नाना प्रकार के खाद्यानों का उत्पन्न करने वाला है, तो उस समय बेटा! देखो **इन्द्र नाम कृषक का है अहिल्या नाम पृथ्वी का है** और चन्द्रमा मुनिवरो! देखो उसमें अमृत देता है और आपो मुनिवरो! देखो वह सूर्य की किरण जब टेढ़ी होती है तो मेघ-मण्डलों का जन्म होता है उससे वृष्टि होती है। वह इन्द्र बेटा! देखो नाना प्रकार की अपनी तीखी किरणों के द्वारा वृष्टि कर देता है और वृष्टि करता हुआ मुनिवरो! देखो वह कृषक अपने में प्रसन्न हो जाता है। तो विचार-विनिमय क्या बेटा! मैं बहुत

नाना प्रकार की क्रान्तियां उत्पन्न हो जाती है। मेरे पुत्रो! देखो मुझे एक समय मेरे प्यारे! महानन्द जी ने वर्णन कराया क्या राम जब वन को जा रहे थे विश्वामित्र के साथ मानो देखो उन्होंने अहिल्या के पद दिया और वह वज्र मानो देखो स्वतः अहिल्या बन गया, ऐसा मुझे वर्णन कराया। परन्तु देखो ऐसा प्रायः नहीं है। वह ऐसा है कि देखो निषाद के राज में यह अहिल्या जैसी मानो देखो पृथ्वी पड़ी हुई थी वज्र के तुल्य। उन्होंने निषाद-राज से कहा हे निषाद! तुम्हारे राष्ट्र में यह अहिल्या इसी प्रकार है, परन्तु इसका उद्धार करो। तो उन्होंने देखो कृषकों के द्वारा उस भूमि को शुद्ध बनाया और शुद्ध बना करके मुनिवरो! देखो वह स्वत मानो देखो उसमें अन्न उत्पन्न होने लगा। वह सुयोग्यता में उसका सदुपयोग होने लगा तो मुनिवरो! देखो उस पृथ्वी का नाम अहिल्या बन गया। राम ने केवल इतना क्योंकि राम इस पृथ्वी के विज्ञान को जानते थे क्या इसमें कितनी दूरी पर कौन सा खनिज है, कौन सा खाद्यान्न है इस प्रकार के परमाणुओं को बेटा! वह सूंघने के द्वारा, रज की सुगन्धि के द्वारा ही मानो उसकी जानकारी कराते रहते थे। तो मुझे स्मरण आता रहता है उनका जीवन मानो देखो इस प्रकार का जीवन था जिस जीवन की हम तुलना करने लगते है विज्ञान में जीवन रहता था और विज्ञान में मानो देखो परिणीत होते हुए उन्होंने बेटा! देखो विज्ञान के माध्यम से एक यन्त्र का निर्माण किया था जिस यन्त्र का नाम **''अहिल्या कृतिभा यन्त्र''** कहलाता था। जो बेटा! देखो पृथ्वी के दस-दस योजन के मुनिवरो! देखो खाद्य-पदार्थो और खनिज को जान लिया जाता था वह प्रायः उन्हें दृष्टिपात आती थी। तो मुनिवरो! देखो इस प्रकार देखो उनका विज्ञान अपने में बड़ा मार्मिक

परमाणुओं का संघर्ष

तो विचार-विनिमय क्या मेरे प्यारे! देखो मुझे बहुत सा विचार स्मरण आता रहता है। हमारे ऋषि-मुनियों की जो विचार धारा एक महानता में रही है वह बड़ी महावृत्तियों में रत्त होती रही है। तो विचार-विनिमय क्या बेटा! देखो परमात्मा का जो ज्ञान है अथवा विज्ञान है वह बड़ा अनन्तमयी माना गया है उसकी अनन्तता मानो देखो प्रत्येक वेद-मन्त्र हमें दर्शाता रहता है और विचार अपने में दर्शायमान करता रहता है। मेरे पुत्रो! देखो जब एक-एक शब्द पर हम विचार-विनिमय करते है तो बेटा! यदि हम इन्द्रियों के शब्दों को ग्रहण करने लगते है। केवल श्रोत्र इन्द्रियों में जाते है तो श्रोत्र इन्द्रिया बेटा! देखो एक मानव की शब्द शब्दावलियों को वह अपने में ध्वनिवान होता रहता है। यदि वही ध्वनि और सूक्ष्मता में जाते है तो रात्रि छाई हुई है अहिल्या में अंधकार है परन्तु देखो जब वह उन ध्वनि को देखो श्रवण करता रहता है जो ध्वनि हो रही है वहां परमाणु अपने में संघर्ष कर रहे है। बेटा! **जो शब्द है, जो प्रत्येक मानव के शब्द अन्तरिक्ष में रमण करते है, वायु मण्डल में प्रवेश करते है, बेटा! उनका संघर्ष होता है** उन ध्वनियों को श्रवण करते रहते है।

अन्नाद

परन्तु और गम्भीरता में जाओगे तो मेरे प्यारे! देखो वह अब्रताम जो मुनिवरो! देखो परमाणुओं का संघर्ष हो रहा है जिससे संसार

अनुभव करता है तो बेटा! मस्तिष्क में एक स्वर ध्वनि होती रहती है उसका स्वर संगम होता रहता है मानो देखो बाह्य-जगत के परमाणुओं का संघर्ष-आन्तरिक-जगत में जब प्रवेश होता है तो योगी-जन **उसको अन्हाद कहते है।** बेटा! वह अन्हाद जो स्वर संगम है वह अपने में बड़ा पवित्रत्व में रमण करता रहा है। तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरो! देखो साधक अपनी साधना में परिणीत होता हुआ और उसको अन्हाद के रूप में बेटा! प्रायः वह दृष्टिपात करता रहता है। मेरे पुत्रो! देखो साधनावादी जो प्राणी होते है वह भी मानो देखो अपने शब्दों को अन्तरिक्ष में ले जाते है, कहीं द्यौ में ले जाते है कहीं मानो देखो संघर्षवर्तो में ले जाते है। तो विचार-विनिमय क्या बेटा! देखो आत्मा को पाना चाहते है परन्तु जब वह अन्हाद देखो ध्वनिया समाप्त हो जाती है तो बेटा! देखो! कही-कही आत्मा और परमात्मा की वार्ता प्रगट होती है, तो बेटा! देखो वह उन वार्ताओं को अपने में ही नहीं मानो देखो अनुभव का विषय बन जाता है। वह न तो ध्वनि बन करके रहता है न संघर्ष बन करके रहता है और न मेरे-पुत्रों देखो यह पञ्च-महाभूतों का नृत बन करके रहता है। तो विचार-विनिमय क्या बेटा! आज मैं तुम्हें गम्भीरता में नहीं ले जा रहा हूं केवल यह कि देखो जो अन्हाद है उसको साधक-जन अपने में ग्रहण करते है और वह नद-नदियों के तट पर मानो देखो उससे भी उपराम हो जाते है। तो विचार-वेत्ता कहते है क्या मुनिवरो! देखो हम अपनी साधना में परिणीत हो जाये। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब बेटा कागभुषण्ड जी अपने में अनुष्ठान करते थे और कागभुषण्ड-जी बेटा! देखो लागाम भूतम ब्रह्मे महर्षि-लोमश

पवित्र बना, संघर्ष परमाणुओं का शुद्ध देवत्व बन गया और देवत्व बन करके बेटा! जब साधना करता है तो देवता बन जाता है।

तो मेरे प्यारे! विचार आता रहता है हमारे ऋषि-मुनियों ने प्रत्येक वस्तु को बड़ी गम्भीरता से चिन्तन में लाये है और उसको बाह्य और आन्तरिक दोनों जगत को उन्होंने विचारने का उन्होंने प्रयास किया है अथवा दोनों को विचारने से ऐसा प्रतीत होता है कि यह जगत जितना यह साधना का क्षेत्र कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो **मानव का जीवन भी एक जीवनम ब्रह्मा वर्णसुतम यह देवत्व कहा जाता है इसमें देवता वास करते है।** जैसे जालवी-ऋषि से एक समय महर्षि-प्रव्हाण ने कहा था कि प्रभु! आत्मा का लोक क्या है तो आत्माम भूतम प्रहवा पञ्चम-भूत तप प्रहे ऋषि कहता है, जालवी ने कहा कि **पञ्च-महाभूत यहां आत्मा का लोक है** आत्मा देखो इसमें वास करता है। यह पञ्च-महाभूतों का लोक है उसी से पांच-ज्ञानेन्द्रियां है, उसी से पांच-कर्मेन्द्रिया है, उसी से दस-प्राण है, उसी से मन-बुद्धि का अवद्येत होता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो यह सर्व जगत है जिस जगत को जानने से हमारे मानव जीवन में प्रकाश आता है और विचार आता है और ज्ञान की पूञ्जी मानो देखो एक ज्ञान रूप बन करके हम विवेक में परिणीत हो जाते है तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरो! देखो विचारम ब्रह्मा वाचुस्तम देवा तो मेरे प्यारे! देखो हमें **अलंकार को अलंकार रूप में विवेक युक्त हो करके दृष्टिपात करने चाहिए** और परमात्मा का अनन्तमयी यह जो जगत है इसके ऊपर विचार-विनिमय करना, अन्वेषण करना और अपने में मृत्युञ्जय बनना मृत्यु से पार होने का, बेटा देखो हम प्रत्येक इन्द्रियों के ज्ञान

आत्मा के लिए आत्मा की जो उत्सुकता है वह अनुशासन चाहता है और जीवन में एक महानता की प्रतिभा का जन्म होता है। तो बेटा! हम परमपिता-परमात्मा की अराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए और मुनिवरो! देखो उसकी प्रतिभा को जानकर के इस संसार-सागर से पार होने का प्रयास करना चाहिए। यह है, बेटा! आज का वाक्य अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूँगा। आज के वाक्य उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय यह कि परमपिता-परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार-सागर से पार हो जाए। यही बेटा! देखो आज का हमारा मन्तव्य है। **आज के विचारो का अभिप्रायः क्या अलंकार और इतिहास दोनों को भिन्न-भिन्न रूप से विचारा जाएगा** तो मानो वह ज्ञान की पूंजी बन करके मानव को अन्तरात्मा तक पहुंचाएगा। यह है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट कर सकूंगा।

ओ३म् देवा आभ्याम् मनु गायन्त्वा रथम् दिव्या वायाऽहाम्।
ओ३म् तनुमन्थाः गाया रथम मां रथं ब्रह्मा गाताऽहाम।
ओ३म् यशश्चाम् ब्रह्म भविता रेवम् भागा वायु रतम्॥

अच्छा भगवन्!

दिनांक २६-१-१९९२
स्थान : माछरा, मेरठ।

सामग्री का शाकल्य

अश्वपति की पत्नि ने कहा पुत्री मैं भी कुछ जानना चाहती हूँ। उन्होंने (बालिका ने) कहा कि प्रश्न करो।

अश्वपति की पत्नि सामग्री का शाकल्य कैसा होता है? कौन से शाकल्य से तुम आहुति देना चाहती हो? तुम्हारा शाकल्य क्या है?

बालिका हे यज्ञमान पत्नि! शाकल्य 24 प्रकार का होता है। 24 प्रकार का शाकल्य दे करके यज्ञाशाला में आहुति दी जाती है। पुनः प्रश्न किया कि हे पुत्री! तुम कौन से शाकल्य से आहुति दोगी? उन्होंने कहा कि सँसार में 17 शाकल्य होते हैं उनकी आहुति दी जाती है। पुनः से प्रश्न किया कि तुम कौन से शाकल्य से आहुति देना चाहती हो? उन्होंने कहा कि 11 शाकल्य होते हैं। उन्होंने फिर प्रश्न किया कि तुम कौन से शाकल्य से आहुति देना चाहती हो? उन्होंने कहा कि वास्तव में मैं 10 शाकल्य से आहुति दिलाना चाहती हूँ। उन्होंने पुनः फिर प्रश्न किया तो उन्होंने कहा कि मैं एक शाकल्य से आहुति दिलाना चाहती हूँ। कैसा सुन्दर वाक्य, कैसा उत्तम वाक्य था। उन्होंने कहा हे देवी! तुम इनकी मीमाँसा करो जिस समय तुम यज्ञशाला में अध्वर्यु बनोगी।

चौबीस की आहुति क्या है? तुम्हें प्रतीत है कि जब मानव जन्म लेता है और सँसार की जानकारी होती है तो 24 प्रकार का इसको हर्ष होता है। जैसे हमारे यहाँ ज्ञान-इन्द्रियाँ होती हैं, पाँच कर्म-इन्द्रियाँ होती हैं, पाँच-प्राण होते हैं और मन, बुद्धि यह सत्तरह बनते हैं परन्तु हर्ष और शोक मिला दिया जाता है और मानो प्रभी अस्तित मिला दिया जाता है तो इस प्रकार से यह चौबीस बन जाते हैं और सत्तरह से कैसे देना चाहती हूँ पाँच-प्राण, पाँच उप-प्राण, पाँच ज्ञान-इन्द्रियाँ हैं, मन और बुद्धि हैं मैं इनका शाकल्य बना करके यज्ञशाला में आहुति देना चाहती हूँ। उन्होंने कहा कि देखो मेरी दस इन्द्रियाँ हैं, दसों

इसको अध्वर्यु बनाया जाये। उस समय उसे अध्वर्यु बनाया गया।

पूज्यपाद-गुरुदेव

(यज्ञ प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व प्रवचन दिनांक 1 नवंबर, 1969)

यौगिक प्रवचन के स्वामीत्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (नियम नं 8)

1.	प्रकाशन स्थान	:	दिल्ली
2.	प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3.	मुद्रक	:	डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश
	नागरिकता	:	भारतीय
	मुद्रक का पता	:	ए-59 पँचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017
4.	प्रकाशक	:	डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश
	नागरिकता	:	भारतीय
	प्रकाशक का पता	:	ए-59 पँचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017
5.	सम्पादक का नाम	:	डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश
	नागरिकता	:	भारतीय
	सम्पादक का पता	:	ए-59 पँचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हो।	:	**वैदिकअनुसंधान समिति (पंजी०)**

मैं डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश

मन

देखो हमारे यहाँ मन पर ऋषियों ने बल दिया है कि मन को पवित्र बनाया जाए। मन सँसार में उन वनस्पतियों का सूक्ष्म रस कहलाता है जिसकी प्रतिष्ठा द्यौ-लोक में रमण करने वाली होती है। यह जो हमारा मन है यह नाना प्रकार की सुन्दर रचनायें रचने वाला है। क्यों रचता है? इस मन की धारा क्या है? मन की जो उपलब्धि मानी जाती है और इसकी जो धारा है वह जो नाना प्रकार की वनस्पतियाँ होती हैं, नाना जो औषधियाँ होती हैं, उनका रस परमाणु बन करके अन्तरिक्ष में रमण कर जाते हैं, उसमें उसकी प्रतिष्ठा हो जाती है उसी को हमारे यहाँ **सार्वभौम मन** कहा जाता है क्योंकि मन प्राण का और नाना प्रकार की वनस्पतियों का उत्पादन नहीं होगा। जिस प्रकार वसुन्धरा, पृथ्वी के गर्भस्थल में नाना प्रकार की वनस्पतियों का जन्म होता है परन्तु वह इसीलिए होता है क्योंकि उसमें एक महानूता होती है, उसमें सार्वभौमता होती है और विभाजन करने की इसमें एक महान् शक्ति होती है क्योंकि प्रकृति के परमाणुओं का मन विभाजन करता रहता है इसीलिए हमारे यहाँ इस मन को वनस्पतियों का घृत कहा जाता है।

1. यौगिक प्रवचन माला (भाग-1)	50.00
2. यौगिक प्रवचन माला (भाग-2)	50.00
3. यौगिक प्रवचन माला (भाग-3)	50.00
4. यौगिक प्रवचन माला (भाग-4)	50.00
5. यौगिक प्रवचन माला (भाग-5)	50.00
6. ल्वहपब ˘पेकवउ वि ।दबपमदज त्ौीपे	50.00
7. वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8. आत्म-लोक	25.00
9. धर्म का मर्म	30.00
10. शंका-निवारण	25.00
11. यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	40.00
12. आत्मा व योग-साधना	25.00
13. देवपूजा	20.00
14. अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	100.00
15. अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	100.00
16. अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	100.00
17. रामायण के रहस्य	35.00
18. यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00
19. महाभारत के रहस्य	20.00
20. अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21. रावण-इतिहास	40.00
22. महाराजा-रघु का याग	25.00
23. वनस्पति से दीर्घ-आयु	25.00
24. मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	30.00
25. चित्त की वृत्तियों का निरोध	25.00
26. आत्मा, प्राण और योग	20.00
27. पञ्च-महायज्ञ	30.00
28. अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	30.00

32. याग और तपस्या	45.00
33. यागमयी-साधना	30.00
34. यागमयी-सृष्टि	25.00
35. याग-चयन	25.00
36. दिव्य-रामकथा	100.00
37. ज्ञान-कर्म-उपासना	25.00
38. दिव्य-ज्ञान	35.00
39. महाभारत एक दिव्य दृष्टि	80.00
40. महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	25.00
41. आत्म-उत्थान	30.00
42. तप का महत्व	30.00
43. अध्यात्मवाद	25.00
44. ब्रह्मविज्ञान	35.00
45. वैदिक-प्रभा	30.00
46. प्रकाश की ओर	35.00
47. कर्तव्य में राष्ट्र	35.00
48. वैदिक-विज्ञान	35.00
49. धर्म से जीवन	30.00
50. आत्मा का भोजन	35.00
51. साधना	30.00
52. त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53. यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54. यौगिक प्रवचन माला (भाग-6)	60.00
55. स्वर्ग का मार्ग	40.00
56. यौगिक प्रवचन माला (भाग-7)	60.00
57. माता मदालसा	40.00
58. यौगिक प्रवचन माला (भाग-8)	60.00
59. पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी	10.00

श्री हरिराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री विवेक त्यागी, अल्कापुरी, हापुड़	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी, सुपुत्रश्री-जयप्रकाशजी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री पूनम त्यागी, नोएड़ा	500 रुपये
श्री वी. पी. सिंह, वसुंधरा, गाजियाबाद	500 रुपये
डा० शुचि, डॉ. राजीव, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री नानकचन्द, देहरादून	200 रुपये
श्रीमती शशि गुप्ता, नोएड़ा,	125 रुपये
डा० ओ. पी. आर्य, आगरा	125 रुपये
श्री गुलजार सिंह, जगत पुरी, कृष्णा नगर, दिल्ली	100 रुपये
श्रीमती वीना त्यागी, अलीगढ़	100 रुपये
श्री राहुल शर्मा, बैंगलोर	100 रुपये
श्री पराग शर्मा, नोएड़ा	100 रुपये

सूचना

सभी आजीवन सदस्यों व अन्य मानुभावओं से नम्र निवेदन है कि उनके पास जो पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के प्रवचनों के कैसेट व विडियों कैसेट उपलब्ध हैं उसके विषय में निम्न पते पर सूचित करें जिससे कि उनको भी प्रकाशित किया जा सके।

वैदिक अनुसंधान समिति के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क 800 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क 100 रु. है जिसको आप समिति के पते पर व निम्न पते पर डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं।

वर्ष 40 : अंक : 474
मार्च 2012

मूल्यः
पाँच रुपये

प्रकाशक, मुद्रक : डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश (प्रकाशन मंत्री वै.अ.स.) द्वारा वैदिक अनुसंधान समिति पंजी०
के लिए नवप्रभात प्रिटिंग प्रैस, दिल्ली से छपवाकर सी-38,
शिवालिक मालवीय नगर, नई दिल्ली-17 से प्रकाशित।
(अवै०) सम्पादक : डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश, दूरभाष : 26498737

POSTED AT N.D.PS.O ON 10-3-2012

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए

उद्‌बोधन

मुनिवरो! यह आज हमें विचारना है कि जिस प्रकार हमारे शरीर में कोई भी होता (इन्द्रिय) कोई भी कृत्य दूरी चला जाए तो वास्तव में देखों हम उससे विहीन हो जाते हैं। हमारी परम्पराएँ, परिचर्चाएँ समाप्त हो जाती हैं। आज हमें यज्ञ स्वरूप की महिमा को विचारना चाहिए। यज्ञ एक प्रकार का विज्ञान है। बेटा! जितना भी विज्ञान है यज्ञ वेदी के आधार पर ही उसका निकास होता है। मुनिवरो! शाकल्य में प्रत्येक पदार्थ होता है सुगन्धि युक्त, पौष्टिक-युक्त, समिधाएँ, नाना घृत, वे सब जब अग्नि में आहुति देते हैं तो इस अग्नि से वृष्टि कराई जाती है। इसी यज्ञ से सँसार को विजय किया जाता है। वह विजय किस प्रकार किया जाता है? इसको विचारना है।

पूज्यपाद-गुरुदेव